बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-108 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जनवरी 2023 | मूल्य - 5 रूपए

आखिर क्यों सड़क एवं कामकाजी बच्चे स्कूल से हो जाते हैं ड्रॉप आउट ?

रिपोर्टर किशन, असलम, संगीता, आंचल, रवि

शिक्षा एक ऐसा हथियार है जिसकी बदौलत आप मेंटली तो शार्प होते ही हैं साथ ही शिक्षा के द्वारा मिली जागरूकता की वजह से आप फिजिकली और फाइलनेसली भी काफी फलते फूलते हैं। हर बच्चा चाहता है कि वह स्कूल जाए। फिर चाहे उस बच्चे के माता-पिता पढ़े लिखे हों या ना हो। अधिकतर माता-पिता भी यही चाहते हैं कि मेरा बच्चा पढ़ लिख कर एक अच्छी नौकरी करें और भविष्य में खूब नाम कमाए। इसी चाह में कम आमदनी के बाद भी माता-पिता अपने बच्चों का अच्छे स्कूल में दाखिला भी करवा देते हैं। लेकिन परेशानी यहीं खत्म नहीं होती और उनको इसके लिए जी तोड़ मेहनत करनी पड़ती है। लेकिन उसके बाद भी जब समस्याएं बढ़ने लगती हैं तो ना चाहते हुए भी वही माता पिता अपने बच्चों का स्कूल से नाम हटवाने को मजबूर हो जाते हैं।

हम उन सड़क एवं कामकाजी बच्चों की बात करने जा रहे हैं जिन बच्चों का स्कूल में पहले से दाखिला तो था, लेकिन वह किसी न किसी कारण से स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर हो जाते हैं। बालक नामा के पत्रकारों ने लखनऊ, आगरा, दिल्ली, हरियाणा, जयपुर के अनेक कामकाजी बच्चों से बातचीत करके यह जानने की कोशिश की कि किस कारण उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ा। नोएडा के सेक्टर 70 में रहने वाली साध्वी (परिवर्तित नाम) के स्कूल छोड़ने की वजह के बारे में पुछा तो साध्वी ने बताया कि वह पिछले एक साल से एनपी बस में पढ़ाई लिखाई करने आती थी और धीरे-धीरे उसे पढ़ाई लिखाई करना अच्छा लगने लगा। फिर उसने स्कूल जाने की। जिस पर एनपी बस पर स्थित कार्यकर्ता ने बच्ची के माता-पिता से बातचीत की और बच्ची का स्कूल में दाखिला करवाने के बारे में समझाया। जिसके बाद माता-पिता मान गए और बच्ची का स्कूल में दाखिला करवा दिया गया। लेकिन स्कूल दूर होने की वजह से माता पिता को बच्ची को स्कूल छोड़ने जाना पड़ता था। कुछ दिन तक तो माता-पिता ने इस कार्य को किया, लेकिन उसके बाद उन्होंने धीरे-धीरे अपने रोजगार के चलते बच्ची को स्कूल छोड़ने जाना बंद कर दिया। क्योंकि स्कूल लगभग 2 किलोमीटर दूरी पर स्थित था। इस वजह से बच्ची अकेले स्कूल जाने में असमर्थ थी। यही दूरी बच्ची के स्कूल से ड्रॉप आउट होने का कारण बन गई।

लखनऊ में रह रहा हिमेश (परिवर्तित नाम) ने कहा कि सबको यह महामारी का नाम तो याद ही है और धीरे-धीरे यह

महामारी कम होती गयी। मैं भी कोरोना महामारी के आने से पहले स्कूल जाता था,लेकिन कोरोनावायरस आने के बाद स्कूल बंद हो गए और हमारी पढ़ाई छूट गयी। महामारी के दौरान घर में पैसे न होने के कारण घर का खर्च न चल पाने के कारण पिता ने कई रिश्तेदारों से एवं पड़ोसियों से कर्ज ले लेकर घर का खर्चा चलाया। कुछ दिन बाद लॉकडाउन हट गया और जब स्कूल खुल गए तो हमने पिताजी से कहा कि हम स्कूल जाएंगे तो पिताजी ने कहा कि बेटा लॉकडाउन के बाद इतना कर्ज हो गया है जिसे मैं अकेले कैसे चुका पाऊंगा। और लॉकडाउन के बाद वैसे ही तुम्हारी पढ़ाई अच्छे से नहीं हो पाई है तो अब एक काम करो कि तुम स्कूल नहीं जाओ। मैं तुम्हे किसी काम में लगा देता हूं। जो पैसे आएंगे उन पैसों से हम कर्जा चुका पाएंगे। इस दौरान पिताजी ने मुझे दुकान में काम करने के लिए लगा दिया और इस कारण मेरा स्कूल छूट गया।

जयपुर में रह रहा आदिल (परिवर्तित नाम) ने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान मेरे पिताजी बहुत शराब पीने लगे, जिसके कारण उनकी तबीयत एकदम से खराब होने के कारण उनकी मृत्यु हो गई। जब मेरे पिताजी इस दुनिया में थे तब मैं स्कूल जाता था, लेकिन घर के मुख्य सदस्य के जाने के बाद घर की स्थिति बहुत खराब हो गयी और खर्चा चलाने में बहुत समस्याएं आने लगी। अब मैं स्कूल जाने की बजाय पानी की सप्लाई करने का काम करता हूं और महीने में 6000 रूपए कमाता हूं।

10 वर्ष मनीष (परिवर्तित नाम) ने बताया जो वह हरियाणा के गुरुग्राम में रहता है। वह सन 2018 में स्कूल जाता था, लेकिन मेरी झुग्गी बस्ती में रहने वाले अधिकतर बच्चे रोजा कबाड़ा बीनने के लिए सड़कों पर जाते थे। उन्हें जो पैसे मिलते थे उनसे वो अच्छी चीजें खाते थे, जिसे देखकर मुझे लालच आता था। में सोचता था कि मेरे पास भी शायद इतने पैसे होते तो में भी खा पाता। यह सोच-सोच कर मेरा पढ़ाई में मन नहीं लग पाया और मैं पढ़ाई में पीछे होता चला गया। मैंने माता जी से कहकर स्कूल से अपना नाम हटवा लिया। फिर मैं भी कबाड़ा बीनने जाने लगा और मेरे पास भी रोज के सौ से डेढ़ सौ रुपए आ जाते। कबाड़ा बिनते बिनते मैं एक कबाड़ी की दुकान में लग गया। अब मैं कबाड़ा की दुकान में काम करता हूं और रोज के 400 रूपए कमा लेता हूं।

नोएडा सेक्टर 52 में रहने वाली आसमा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह नन्हे परिंदे बस पर पढ़ाई करने आती थी।

शेष पृष्ठ 2 पर

घर की समस्याओं में फंसे बच्चे -खुले में सुबह 9 बजे से शाम को 9 बजे तक लगाते हैं चप्पल का ठेला

बातूनी रिपोर्टर कामिनी व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

हर किसी को अपना पेट पालने के लिए कोई ना कोई काम तो करना ही पड़ता है। ऐसा ही कुछ हाल हमारे लखनऊ के बच्चे भी है। जब हमारे बालकनामा पत्रकार ने बच्चों की समस्या जानने की कोशिश की तो छोटे-छोटे दो बच्चों ने अपनी समस्याएं रखी और बताया कि दीदी हमारे पापा बाल कटिंग का काम करते और वहीं पर एक चप्पल की दुकान भी लगाते हैं, जिसमें हम लोग पापा की मदद करने के लिए जाते हैं। हम सुबह 9 बजे जाते हैं और शाम को 9 बजे ही आते हैं। पहले तो गर्मी थी तो हम लोग यह काम कर भी लेते थे पर अब तो ठंडी शुरू होने लगी है तो और भी ज्यादा समस्या उठानी पड़ेगी क्योंकि हम लोग खुले में चप्पल का ठेला लगाते हैं। इसलिए जब हवा चलती है तो हम लोगों को बहुत ठंडी लगती है। लेकिन दीदी क्या करें मजबूरी है और घर का खर्चा चलाने के लिए पापा की मदद तो करनी ही पड़ेगी जिसके कारण हम स्कूल भी नहीं जा पाते हैं।

क्या गुड्डू को बंदरों से मिल पाएगा छुटकारा ?

बातूनी रिपोर्टर : मुख्तियार
बालकनामा रिपोर्टर : असलम

अगर आपको जिंदगी जीनी है तो इसके लिए आपको काम तो करना ही पड़ता है फिर आप चाहे सडकों पर रह रहे हो या बंगलों में। बस फरक इस बात का है कि हमारे सड़क एवं कामवाली बच्चों का बचपन छीन कर उनको काम में लगा दिया जाता है। ऐसे ही हमारे बालकनामा पत्रकारों ने पंलडा की झुग्गियों का दौरा किया तो देखा कि एक बच्चा गुड्डू (परिवर्तित नाम) अपनी मां के साथ तुलिप (परिवर्तित जगह) पर सब्जी की रेडी लगाकर अपने घर को चलाता था। उसका जीवन अच्छा चल रहा था। वह शाम को 3 बजे सब्जी बेचने जाता और रात के 10 बजे घर को लौट आता। सब्जी बेचकर उसको अच्छी कमाई भी हो रही थी। लेकिन उसकी यह खुशी ज्यादा दिनों की नहीं थी। एक दिन जब गुड्डू और उसकी माता जी सो रहे थे तो उनके घर पर बहुत सारे बंदरों ने एक साथ हमला बोल दिया और उसकी रेडी पर से टमाटर, खीरा, गाजर, मूली आदि सब्जियां लेकर भाग गए और तो और बाकी सब्जियां भी तहस-नहस कर दी। जब पत्रकारों ने उनसे पुछा कि आपने बंदरों को भगाया क्यों नहीं?तो गुड्डू ने कहा

भैया मैं और मेरी माता जी दोनों मिलकर 2 से 4 बंदरों को भगा देते थे, लेकिन जब एक साथ 10 से 11 बंदर आ जाते हैं तो मैं और मेरी माता जी बहुत ही डर गए। पत्रकार ने कहा आपने किसी से मदद नहीं मांगी? गुड्डू ने कहा भैया हमने बहुत बड़े अधिकारियों से भी इस मामले में बात की है तो यह लोग कहते हैं कि आप लोग जहां रहते हो वहां पहले जंगल थे इसलिए बंदर यहां पर आ जाते हैं। आप लोग उनकी जगह पर रहते हो इसलिए बंदर आप लोगों की सब्जियां फैला देते हैं और आप लोगों को परेशान करते हैं। फिर गुड्डू ने कहा भैया यह लोग खाली हमें यह बात कह देते हैं परंतु इन लोगों को यह नहीं दिखता कि बंदर हमारी रेडी खराब कर देते हैं, हमारी सब्जी फैला देते हैं और तो और हमें नुकसान भी पहुंचाते हैं। पत्रकारों ने गुड्डू से पूछा कि आपको अगर एक मौका मिले तो आप क्या बनना चाहोगे तो गुड्डू ने कहा भैया अगर हमारा इन बंदरों से छुटकारा दिलाने में कोई मदद करें तो मैं पक्का बड़ा होकर एक बहुत बड़ा सब्जियों का व्यापारी बनना चाहूंगा।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

लैंगिक भेदभाव से कब मुक्त होगा यह समाज?

बालकनामा रिपोर्टर :असलम

हमारे देश भारत में लैंगिक भेदभाव का मुद्दा एक सामाजिक मुद्दा है। लैंगिक भेदभाव समाज में किसी भी व्यक्ति के साथ उसकी लैंगिक पहचान के आधार पर भेदभाव करने को संदर्भित करता है। हमारे पत्रकारों ने भुवनेश्वर की 50 लड़कियों से लैंगिग भेदभाव से जुडी उनकी समस्याओं पर बात की। उनसे जाना कि लड़कियों को कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है? बातचीत के दौरान किसी ने धर्म के ऊपर, किसी ने जाति विवाद पर, लड़की है तो बाहर घूमने का अधिकार नहीं दिया जाता, खेलने नहीं दिया जाता इत्यादि से जुड़ी बातें निकलकर सामने आयी। 14

परिवर्तित नाम रानी ने कहा भैया हमारे यहां अगर किसी के घर लड़का पैदा होता है तो बहुत ही धूमधाम से खुशियां मनाई जाती हैं। टेंट लगवाए जाते हैं, मिठाई बटवाई जाती है और प्रत्येक गांव वासियों को खाने पर बुलाया जाता है। लेकिन अगर किसी के घर लड़की पैदा हुई तो किसी को कानों कान पता भी नहीं चलता कि उसके घर में लड़की हुई है। और तो और कुछ ऐसे लोग भी हैं जो लड़कियों को पैदा करते ही मार देते हैं क्योंकि लड़के ही अगली पीढ़ी के वारिस होते हैं लड़कियां नहीं। परिवर्तित नाम सौम्या ने कहा कि भैया हमारे यहां के स्कूलों में लड़कियों एवं लड़कों के साथ बहुत ही भेदभाव किया जाता है। हमारे यहां स्कूलों में लड़कियों को अलग बैठाया जाता है और लड़कों को अलग बैठाया जाता है। लड़कियों के लिए टूटे-फूटे शौचालय हैं जिसमें लड़के भी चले जाते हैं। जब हमारे स्कूल में कोई भी खेल प्रतियोगिता होती है तो सिर्फ लड़कों को ही खिलाया जाता है लड़कियों की कोई भी भागीदारी नहीं होती। कभी-कभी खो-खो जैसे गेम में जहां आजकल लड़के भी खेल रहे हैं बस उसी में खेलने के लिए मौका मिलता है। हम लड़कियां हैं हमें भी क्रिकेट आदि गेम खेलना है लेकिन हमें मौका ही नहीं दिया जाता और हमसे इतना भेदभाव क्यों किया जाता है। पत्रकारों ने लड़कियों से कहा अगर आपको एक मौका मिले तो आप सभी क्या बनना चाहोगी तो कुछ लड़कियां कहने लगी भैया हम तो कलेक्टर बनेंगे, कुछ लड़कियां डॉक्टर, और कुछ लड़कियां कहने लगी भैया हम तो समाज की सोच को बदलना चाहते हैं ताकि कोई भी व्यक्ति लड़की और लड़कों के साथ भेदभाव ना करें।

मदद की गुहार लगा रहे हैं सड़क एवं कामकाजी बच्चे

समय पर बोर्ड परीक्षा की फीस न जमा की गयी तो वो दसवीं की परीक्षा नहीं दे पाएंगे

बातुनी रिपोर्टर आकाश बालकनामा रिपोर्टअसलम

यह बात सत्य है कि बिना शिक्षा के कोई भी व्यक्ति कामयाब नहीं हो सकता। शिक्षा से ही कामयाबी की सीढ़ी हासिल की जा सकती है। शिक्षा के बलबूते पर आप कुछ भी कर सकते हो। लेकिन उन बच्चों का क्या जो शिक्षा ग्रहण तो करना चाहते हैं लेकिन उनके पास पढ़ाई के लिए पैसे नहीं हैं।हमारे बालकनामा पत्रकार जब बादशाहपुर के दौरे पर गए तो हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चों से मिले और उनसे बातचीत की। बातचीत के दौरान पता चला कि बच्चे एक बहुत ही गंभीर मुसीबत में हैं क्योंकि हरियाणा सरकार आठवीं कक्षा के बाद नौवीं कक्षा से हर महीने फीस लेती है और दसवीं कक्षा की बोर्ड की फीस बहुत ही ज्यादा है। हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चों के पास इतना पैसा नहीं है कि वह प्राइवेट स्कूल में पढ़ पाए इसलिए वे सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं। अब जो बच्चे दसवीं कक्षा में हैं उनको बोर्ड की 850 रूपए फीस जमा करनी है लेकिन बच्चों के माता-पिता यह फीस नहीं दे सकते क्योंकि वो रोज जो कमाते हैं उसे रोज के खर्चों और खाने में लगा देते हैं। जो कुछ बचता है वह बच्चों की पढ़ाई में लग जाता है। बोर्ड की फीस ना भरने के कारण सड़क एवं कामकाजी बच्चे बहुत परेशान हैं। यदि समय पर बच्चों के बोर्ड परीक्षा की फीस न जमा की गयी तो वो दसवीं की परीक्षा नहीं दे पाएंगे। सरकारी स्कूल के अध्यापक बोर्ड फीस ना देने के कारण सड़क एवं कामकाजी बच्चों को उनका रोल नंबर नहीं दे रहे हैं।

चोरों ने भी अपना चोरी करने का तरीका बदला, घर पर अकेले रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों को बना रहे हैं अपना शिकार

ब्यूरो रिपोर्ट

साथियों यह तो हम सभी जानते हैं कि आजकल क्राइम बढ़ता ही जा रहा है। जिन जगहों पर सीसीटीवी कैमरे एवं गार्ड आदि तैनात रहते हैं उन जगहों पर भी चोर हाथ साफ कर जाते हैं। तो फिर सड़क एवं कामकाजी बच्चों के रहने वाले स्थान की तो बात ही क्या की जाए। वहां ना तो कैमरे होते हैं और ना ही कोई गार्ड उनकी सुरक्षा में तैनात होता है। इसी वजह से आजकल चोरों ने भी अपना चोरी करने का तरीका बदल लिया है। और अब वह उन सड़क एवं कामकाजी बच्चों को अपना शिकार बना रहे हैं जो कि अपने माता-पिता के काम पर चले जाने के बाद घर पर अकेले रहते हैं। जी हां दोस्तों बिल्कुल सही पढ़ा आपने हम बच्चों की ही बात कर रहे हैं। यह घटना नोएडा सेक्टर 52 में रहने वाली दो सगी बहनों के साथ घटी है। जब उन दोनों बच्चियों

के माता-पिता काम पर चले गए तो उस दौरान उनके घर पर एक अनजान व्यक्ति आता है और उन दोनों बच्चियों से कहता है कि मुझे आपके पिताजी ने भैजा है और उन्होंने फोन एवं सिलेंडर मंगवाया है। इस बात को सुनकर दोनों ही बच्चियों ने उसके बहकावे में आकर घर में रखा हुआ फोन एवं बड़ा वाला सिलेंडर उस व्यक्ति को दे देती हैं। जिसके बाद वह व्यक्ति दोनों चीजों को लेकर बड़ी आराम से वहां से चला जाता है। शाम को जब उन बच्चियों के माता-पिता काम पर से वापस आते हैं और घर पर रखा मोबाइल एवं सिलेंडर नहीं दिखा तो उन्होंने दोनों बच्चियों से पूछा। तब बच्चियों ने बताया कि आपने ही तो दोपहर में एक आदमी को घर पर भेजकर दोनों चीजें मंगवाई थी। इस बात पर बच्चों के पिता ने कहा कि उन्होंने किसी व्यक्ति को घर नहीं भेजा है, तब सच्चाई का पता चला। इस न्यूज के माध्यम से हम सभी बालकनामा पढ़ने वाले बच्चों एवं बड़ों को यह बताना चाहते हैं कि वह भी अपने बच्चों को एवं बच्चे अपने बहन भाइयों को इस घटना के बारे में जरूर बताएं ताकि वह भी इस तरह की घटनाओं से सचेत रहें। और भविष्य में इस तरह के किसी भी अनजान व्यक्ति को कुछ भी देने से पहले एक बार अपने परिवार वालों से जरूर पूछ लें और संदेह होने पर तुरंत अपने आसपास के व्यक्तियों से मदद लें।

अपने टैलेंट को दिखाकर अपने घर को चलाना पड़ता है यह नहीं किया तो माता-पिता का सहारा कौन बनेगा?

बातूनी रिपोर्टर पुरानिया कामिनी व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

आजकल की बात करें तो हर एक प्रत्येक व्यक्ति के अंदर कोई ना कोई टैलेंट होता है जिसके कारण वह कोई ना कोई काम करने की क्षमता रखता है। कुछ इसी प्रकार के हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे हैं इनके अंदर भी कोई ना कोई ऐसा टैलेंट छुपा हुआ है जिसका इस्तेमाल करके अपना पेट भरने का बंदोबस्त कर लेते हैं। साथ ही अपने घर का पालन पोषण करने में अपने अभिभावकों की मदद करते हैं। तो चलिए आज हम कुछ ऐसे बच्चे से आपको मिलवाते हैं जो कि लखनऊ शहर में कहीं भी मिल सकते हैं। हमारे लखनऊ के बालकनामा पत्रकार ने एक बस्ती में एक सर्कस दिखाने वाले बच्चे से मिले जो पैसे कमाने के लिए यह कार्य करता है। हमने देखा कि कभी वह बच्चा रस्सी पर चल रहा था और कभी अपने मस्तक पर कांच की बोतल रखें डांस कर रहा था। जब हमारी उस बच्चे से बात चीत हुई तो उस बच्चे ने बताया कि दीदी यह काम हमने बचपन से ही करना सीख लिया था। हमारे मम्मी पापा सर्कस दिखाने का काम करते हैं तो उन्हीं लोगो को देखकर ही हम बड़े हुए हैं। तभी से ही हमें भी यह सर्कस का काम करना पड़ता है। बातचीत करने के दौरान हमने उस बच्चे से यह भी पूछा क्या आपका पढ़ने

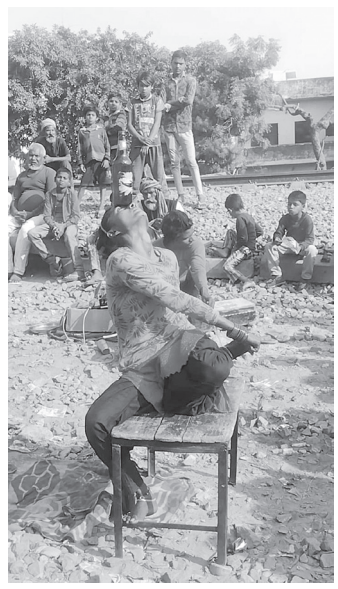

का मन नहीं होता? बच्चे ने यह बोला कि दीदी कैसे पढ़ सकते हैं आप ही देखिए कि हम लोग कैसे पैसे कमा कर अपना पेट भरते हैं। हमें बच्चे ही अपने मम्मी पापा का सहारा हैं तो अगर हम पढ़ाई करने लगेंगे तो हम खाएंगे क्या? मतलब उस बच्चे से बातचीत करने पर यह पता चल रहा था कि वह बच्चा कैसी दुविधा में फंसा हुआ है और उसकी परिवार की स्थिति बहुत ही ज्यादा खराब है और वह अपनी इन परिस्थितिओं से परेशान होकर वह इस काम में अपने मम्मी पापा की मदद करता है।

आखिर क्यों सड़क एवं कामकाजी बच्चे स्कूल से हो जाते हैं ड्रॉप आउट?

पृष्ठ 1 का शेष

धीरे-धीरे उसे पढ़ाई करना अच्छा लगने लगा, जिसके बाद बच्ची के अभिभावकों ने बच्ची का स्कूल में दाखिला कराने की इच्छा जाहिर की। नन्हे परिंदे के कार्यकर्ता ने काफी भागा दौड़ी करके स्कूल वालों से बात करके बच्ची का किसी प्रकार से दाखिला करवाया। स्कूल में बच्ची की उम्र के अनुसार उसका कक्षा 6 में एडमिशन हुआ। कुछ दिन तक तो वह बहुत खुशी से स्कूल गई। अगर कभी बच्ची को कोई छोटी मोटी परेशानी होती तो कार्यकर्ता एवं बच्ची के अभिभावक उसे समझा देते। लेकिन बच्ची ने बताया कि उसकी स्कूल की टीचर बच्ची को क्लास में खड़ा करके सवाल पूछने लगती थी और वह पढ़ाई में थोड़ी कमजोर होने के साथ-साथ थोड़ी शमीर्ली स्वभाव की थी इसीलिए वह टीचर द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब नहीं दे पाती थी। जिस पर टीचर बच्ची को डांटती और पनिशमेंट देती थी। बच्ची को यह बात बुरी लगने लगी और फिर एक दिन ऐसा आया कि बच्ची ने स्कूल जाना ही छोड़ दिया।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

नशेड़ी बच्चों के दुर्व्यवहार से खुद को असुरक्षित महसूस करती हैं लड़कियां

ब्यूरो रिपोर्ट

सड़कों पर गलियों में हर एक कोने में हम बड़े बच्चों को नशा करते हुए जरूर देखते हैं। इन बच्चों की उम्र १४ से १७ साल तक होती है। ये बच्चे सड़कों पर आती-जाती लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। नोएडा सेक्टर 49 में रह रही दीप्ति (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम जब भी अपने घर से कोई जरूरी काम क्र लिए, पार्क या ट्यूशन के लिए जाते हैं तो हमें सड़कों पर अन्य बड़े बच्चे नशा करते हुए नजर आते हैं। वह लड़कियों को घूर घूर कर देखते हैं और यदि लड़कियां उन्हें कुछ कह दे तो वह उन्हें अवशब्द बोलना और उनका पीछा करना शुरू कर देते हैं। एक दिन हम भी अपने ट्यूशन से पढ़ कर आ रहे थे और उस समय मेरे साथ मेरी एक सहेली थी। मेरी सहेली और मैं रास्ते से बिना डरे आराम से घर की ओर जा रहे थे। मेरी सहेली की एक दोस्त रास्ते में टकराई और मेरी सहेली उस दोस्त से बात करने लगी। तब मैंने देखा कि हमारी सहेली जिस जगह खड़े होकर अपनी दोस्त से बात कर रही थी, उसी जगह के बगल में एक 17 वर्ष का बालक कपड़े में सुलेशन लगाकर सुलेशन का नशा कर रहा था। वह हमसे बदतमीजी ना करने लगे इस बात से मैं डर गई। वह मेरी तरफ गलत तरह से घूर घूर कर देख रहा था और गलत इशारे कर रहा था। तभी मैंने यह बात अपनी सहेली को बताई और हम बिना कुछ कहे उस स्थान से चल दिए। फिर वह नशेड़ी लड़का हमारा पीछा करने लगा तो हमने भागना शुरू किया। रास्ते में कई लोग यह देख रहे थे लेकिन किसी ने मदद नहीं की। जैसे तैसे करके उस दिन हम अपनी जान बचाकर उधर से भाग पाए। यह नशेड़ी बच्चे रोज रास्तों में आती-जाती लड़कियों को ऐसे ही परेशान करते हैं। जब हम दुकान पर सामान लेने के लिए जाते हैं, तब भी हम लड़कियों को इन परेशानियों का सामना करना पड़ता है और घर से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है।

घर की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण टूट जाता है बच्चों का हौसला

बातूनी रिपोर्टर बबीता व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

जैसा कि यह बात तो हम सभी लोगो ने सुना होगा कि हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे पढ़ना तो चाहते हैं पर घर की आर्थिक स्थिति सही नाहोने के कारण वह अपनी पढ़ाई नहीं कर पाते हैं और घर के कामों में ही दब कर रह जाते हैं। यही समस्या हमारे लखनऊ के बच्चों की भी हैं। जब हमारे बालकनामा ने पत्रकार ने बच्चों से मिलकर बातचीत की और पूछा कि कितने बच्चे स्कूल जाते हैं तो अधिकतर बच्चों ने बोला कि हम स्कूल जाते हैं। एक बच्चे ने अपनी समस्या बताते हुए कहा कि दीदी मैं स्कूल नहीं जा पाता हूं क्योंकि मैं कूड़ा उठाने का काम करता हूँ। एक बहुत बड़ी सी बिल्डिंग है, जिसमे मैं कूड़ा लेने जाता हूँ और कुछ घरों में भी कूड़ा उठाने के लिए जाता हूं। जिसके कारण मेरा पूरा समय ऐसी ही निकल जाता है और इस वजह से मैं स्कूल नहीं जा पता हूँ। जब मैं किसी भी बच्चे को स्कूल जाते हुए देखता हूं तो मेरा भी स्कूल जाने का बहुत मन करता है कि मैं भी स्कूल जाऊं और पढ़ लिखकर कुछ अच्छा काम करूँ। लेकिन घर की समस्याओं के कारण मजबूर हूं।

जीने की मूलभूत सुविधाओं से वंचित बच्चे

बातूनी रिपोर्टर मेघा व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चों को हर दिन किसी न किसी मुसीबत का सामना करना पड़ता है। उनको रहने के लिए न कोई अच्छी जगह मिलती है और न ही खाने के लिए पर्याप्त भोजन। यदि रहने के लिए जगह मिल भी जाती है तो वहां पर उनको अनेक प्रकार की मुसीबतों का सामना करना पड़ता हैं। यही हाल हमारे लखनऊ के बस्ती के बच्चों का भी है। जब हमारे बालाकनामा पत्रकार बच्चों से बात करके उनकी समस्या जानने की कोशिश की तो वहां के बच्चों ने बताया कि दीदी जहां पर हम लोग रहते हैं वहां पर कोई भी सुविधा नहीं है। वहां सार्वजनिक शौचालय नहीं हैं और ना ही लाइट की कोई सुविधा है। और तो और पानी की भी बहुत ज्यादा समस्याएं हैं। पानी भरने के लिए हमें बहुत दूर जाना पड़ता है और जहां पर हम लोग पानी लेने जाते हैं वहां के लोगों हमसे हर रोज 10 रूपए पानी का लेते हैं तभी पानी भरने देते हैं। वरना वह हमें वापस भेज देते हैं और पानी भरने नहीं देते। जैसे कभी-कभी हम लोगों के पास पैसा नहीं होता हैं तो हम लोगों को पानी नहीं भरने देते हैं। जिसके कारण बहुत ज्यादा समस्याओं का सामना करना पड़ता है अब हम लोग करें तो क्या करें।

बच्चों ने कहा गरीबी का टैग लगा कर हमें बेइज्जत ना किया जाए

ब्यूरो रिपोर्ट

इस बात से तो सभी भलीभांति परिचित हैं कि जनसंख्या बढ़ने के कारण हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चों को बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। अधिकतर हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चों के अभिभावक अशिक्षित होने के कारण उनको स्कूल भेजने की बजाय काम पर भेजते हैं। इस विषय को लेकर हमारी लखनऊ की बालकनामा पत्रकार ने हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बातचीत की तो बच्चों ने बताया कि दीदी यह तो बात आप भी जानते हो कि हम लोग बाहर घरों में काम करने जाते हैं। लेकिन कभी-कभी तो ऐसा होता है दीदी किसी भी कारणवश अगर हम लोग काम करने नहीं जा पाते हैं तो वहां के लोग हमें बहुत बुरा भला कहते हैं। शर्म की बात है कि हम उनको कुछ कह भी नहीं सकते।

बच्चों ने यह भी बताया कि दीदी जब वह लोग हमें अशब्द बोलते हैं तो हमें अच्छा नहीं लगता है। कभी-कभी तो हमें ऐसा लगता है कि हमारी इस दुनिया में कोई पहचान है कि नहीं। बालकनामा पत्रकार ने बच्चे से पूछा यह सब बातें आप अपने अभिभावकों को क्यों नहीं बताते हो? तो उनमें से कोई भी बच्चा ऐसा नहीं था जिसने यह सब बातें अपने अभिभावकों को बताई हों। बल्कि उनको यह डर है कि अगर वह बताएंगे तो उनका कहीं काम ना छूट जाए। इस डर से बच्चे अपने अभिभावकों को नहीं बताते हैं।

पत्रकार ने बच्चों को समझाया कि अगर आपके साथ किसी भी प्रकार की दुर्घटना होती है तो आपको सबसे पहले अपने अभिभावकों को बताना है। अगर वह कुछ नहीं कहते हैं तो आपको तुरंत एक्शन लेना है और अपने अभिभावकों को समझाना है कि यह हमारे साथ अच्छा नहीं हो रहा है। आप लोगो के घर काम करने जाते हो तब जाकर वो आपको पैसे देते हैं इसलिए किसी की बेइजती करने का अधिकार उनको नहीं होता है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

पश्चिमी दिल्ली इलाकों में चलता है गुंडे बच्चों का गैंग

ब्यूरो रिपोर्ट

हर कोई अपने इलाके में शेर होता है, यह बात तो आप जानते ही होंगे। हम बात कर रहे हैं उन बच्चों की जो बच्चे छोटी सी उम्र में गैंग बनाकर रहते हैं। वो रिश्वत लेकर एक दूसरे को मारने का काम करते हैं। यह खबर पश्चिमी दिल्ली में रहने वाले बच्चों की है। एक बालक ने बताया हम इस स्थान पर रहते हैं हमारी आसपास की गलियों में बच्चों की एक गैंग है। उस गैंग में 10 बच्चे हैं और यह बच्चे 11 वर्ष से लेकर 17 वर्ष तक के हैं। इन सभी बच्चों का इनके इलाकों में सिक्का चलता है और सब इन से डरते हैं। इस गैंग में सभी बच्चे तरह-तरह का नशा भी करते हैं और यह नशे में इतने डूबे रहते हैं कि यह किसी से भी लड़ जाते हैं। यह बात इन बच्चों के माता-पिता को पता रहती है, कि बच्चे बिगड़ रहे हैं और गुंडागर्दी कर रहे हैं। यह बच्चे माता-पिता की बात नहीं समझते और उनसे बदतमीजी से बात करते हैं। यदि इन बच्चों की गैंग में से एक बच्चा अकेले किसी व्यक्ति से पिट गया तो यह अकेला बच्चा वहां पर तो मार खाकर आ जाता है फिर यह दोबारा अपनी गैंग के साथ जाता है और ये बदला लेकर ही वापस लौटते हैं। आसपास में अधिकतर अन्य बच्चों की लड़ाई झगड़े होते रहते हैं। यदि उन्हें उनसे बदला लेना है तो वह बच्चे इन बच्चों की गैंग के पास आते हैं। इन बच्चों को फोटो दिखाते हैं और काम बताते हैं, कि कहां पर मारना है। वह पूरी जानकारी दे देते हैं और यह सभी गैंग एक साथ मिलकर उन पर वार करने के लिए जाते हैं। यदि यह किसी कारण से फस जाते हैं तो इनके पास तरह तरह के हथियार होते हैं, जैसे छोटी सी कुल्हाड़ी और जो हाथ में और जेब में भी आ जाती है। यह लोग उन पर बटनची से बात करते हैं बटन की काफी खतरनाक हथियार है, जो बहुत धारदार होता है और एक बार पेट में मार दिया जाए और फिर बाहर निकाले तो इंसान खत्म हो जाता है। अपना काम करने के बाद इन्हें पैसे भी मिलते हैं और यह पैसे सारे बच्चे आपस में बांट लेते हैं।

चलती मालगाड़ियों से सामान चोरी करते हैं बच्चे

ब्यूरो रिपोर्ट

पश्चिमी दिल्ली की झुग्गी बस्तियों के बच्चों से पत्रकारों ने मुलाकात की। बच्चों ने बताया कि झुग्गी बस्ती के बगल में ही रेल पटरी भी निकल रही है, जिसमें हर 2 से 5 मिनट में एक रेलगाड़ी आती जाती रहती है। रेलगाड़ियों में कई प्रकार का माल आता है, जैसे लोहा, फल, सब्जी, दाल, चावल, कोयला आदि सामान आता जाता है। मालगाड़ी द्वारा लाये गए सामान के गाड़ियों से चोरी भी किए जाते हैं। यह काम बच्चे बड़े लोगों के साथ मिलकर करते हैं। इन बच्चों और बड़ों की एक गैंग होती है, जिसमें 12 से 15 लोग होते हैं। जब मालगाड़ियां आती हैं तो उस चलती रेलगाड़ी में 8 लोग चढ़ जाते हैं और रेलगाड़ी में जितना सामान होता है उन सामान को यह नीचे फेंकते रहते हैं और बाहर इनके जो कुछ साथी होते हैं, वह उस सामान को एक तरफ करते रहते हैं। यह लोग कभी भी यह कार्य करने लग जाते हैं, चाहे वह दिन हो या रात। इन लोगों को अधिकतर झुग्गी बस्ती में रहने वाले लोग देखते रहते हैं और यह बात हर झुग्गी में रहने वाले लोगों को एवं बच्चों को पता रहती है। लेकिन वह कुछ नहीं कह पाते। यदि कोई इन लोगों की शिकायत भी करेगा तो यह लोग उन पर हमला कर देते हैं और उसको मारने लग जाते हैं। जितने भी बच्चे इस गैंग में काम करते हैं इन सभी बच्चों से काम कराया जाता है। इन गैंग का एक बड़ा मालिक होता है वह इन सभी को पैसा देता है और काम करवाता है। यह सभी चीजें ट्रेन से निकालने के बाद दुकानों पर जाकर सस्ते दाम में बेच देते हैं और जो पैसा आता है वह अपने मालिक को देते हैं। मालिक फिर इन सभी को 500 रूपए देता है। यह बात बच्चों के माता-पिता को भी पता रहती है कि हमारे बच्चे यह कार्य करते हैं लेकिन फिर भी वे उन्हें कुछ नहीं कहते।

घर के खर्चों से बच्चे भी हैं परेशान

बातूनी रिपोर्टर मेघा व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

जैसा कि यह बात तो सभी जानते हैं कि जब घर की आर्थिक स्थिति खराब होती है तो अभिभावक तो परेशान होते ही हैं, उनके साथ-साथ उनके बच्चे भी बहुत परेशान हो जाते हैं। यही नहीं अपने घर की मदद करने के लिए वह काम करने लगते हैं। ऐसे हाल हमारे लखनऊ के बस्ती के बच्चों का भी है। जब हमारे बालकनामा पत्रकार ने रिपोर्टर बैठक में बच्चों से बातचीत की और उनकी समस्या जानने की कोशिश की तो एक बच्चे ने अपनी समस्या बताते हुए कहा कि दीदी मैं गुब्बारा बेचने का काम करता हूं। इसके कारण मैं स्कूल में पढ़ने नहीं जा पाता हूं। मुझे अपने घर पर रोज का खर्चा देखना पड़ता है। मेरे पापा जहाँ काम करते है वहां उनको एक महीने के बाद पैसा मिलता है और मम्मी भी बाहर घरों में झाड़ू पोछा करने के लिए जाती हैं तो उनको भी एक महीने के बाद पैसा मिलता है। इसके कारण घर का खर्चा चलाने में बहुत दिक्कत होती है। हम जब रोज गुब्बारे बेचने जाते हैं तभी हमारे घर का खर्चा निकल पाता है। यही वजह है कि हम स्कूल नहीं जा पाते हैं।

बरात में शामिल होकर बारातियों की जेब काटते हैं बच्चे

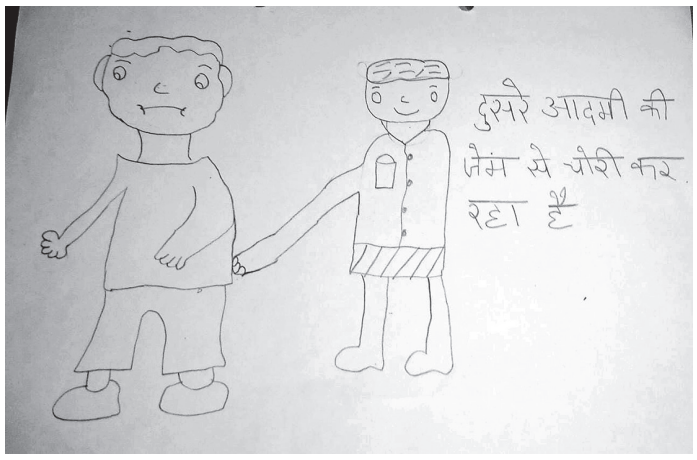

बातूनी रिपोर्टर रामपाल वह रिपोर्टर किशन

जैसा कि जानते हैं कि शादी बरात में बराती लोग डीजे पर खूब डांस करते हैं और खूब मजे लेते हैं। लेकिन उनके साथ कुछ ऐसी घटना भी घट जाती है, जिसका उन्हें पता नहीं चल पाता। दिल्ली में रहने वाले परिवर्तित नाम देव ने बताया कि हम जिस झुग्गी बस्ती में रहते हैं वहां इस समय रोज गलियों में बरात आती जाती रहती हैं। और हमारी गलियों के बच्चों का एक गैंग है जिसमें 9 लोग हैं। जब शादी बारात आती है तो यह बच्चे शादी बरात में बिना बुलाए चले जाते हैं और यह अच्छे से तैयार होकर, अच्छे कपड़े पहन कर और साफ-सुथरा होकर जाते हैं। जिससे इन्हें कोई पहचान ना पाए। यदि कोई भी इन्हें देखें तो वह यही समझे कि यह बरात का ही व्यक्ति है। जब बच्चे एवं बड़े लोग डीजे पर धूमधाम से डांस कर रहे होते हैं, तो यह बच्चे भी उस डांस में चले जाते हैं, और मजे से मनोरंजन करते हैं। बारातियों के साथ यह लोग और बच्चे नाचते-नाचते उन लोगों की जेब में से बटुआ और पैसे निकाल लेते हैं। इतना ही नहीं उनके हाथ में और गले में सोने की चैन और सोने की अंगूठी भी होती है तो यह ऐसे तरीके से निकालते हैं ताकि उसे भनक तक नहीं लग पाती। जब यह जेब काटते हैं तो इन बच्चों के पास ब्लेड होती है, जो वह नाचते हुए लोगों की जेब में मारते हैं और उन्हें बिल्कुल भी पता नहीं चल पाता और आराम से बटुआ निकाल लेते हैं। यदि कभी ऐसा करते हुए यह पकड़े जाते हैं तो इन बच्चों को लड़कियों वालों की तरफ ले जाते हैं और उनसे पूछताछ करते हैं कि क्या यह आपके रिश्तेदार हैं। यदि वह मना कर देते हैं तो वह पूरी तरह से पकड़ जाते हैं। जो इनके गैंग के साथी होते हैं वह पकड़े हुए बच्चे का बिल्कुल साथ नहीं देते क्योंकि यदि वह कुछ बोलेंगे तो यह भी पकड़े जाएंगे और फिर इन्हें मारपीट करके छोड़ दिया जाता है और फिर दोबारा यही काम करने लग जाते हैं।

बच्चों ने बच्चों पर किया वार पीट पीट कर किया घायल

ब्यूरो रिपोर्ट

परिवर्तित नाम देव ने बताया वह दिल्ली में रहता है और रोज मस्जिद जाता है। उस मस्जिद में वह पढ़ाई भी करता है। हर शुक्रवार को जुम्मे वाले दिन बच्चे मस्जिद जाते हैं और मस्जिद में जितने भी बच्चे और बड़े आते हैं, वह मस्जिद में चंदा इकट्ठा करते हैं। चंदा में जिसको जितने रूपए देने होते हैं वह उतने दे देता है और यह पैसे मस्जिद के उन कामों में जैसे पानी का पाइप ना होना, मोटर खराब हो जाना, लाइट में दिक्कत आना, चटाई ना होना आदि के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। उस मस्जिद में एक बच्चा भी आता है जो 12 वर्ष का है। वह जब भी आता है वह उन चंदा किए गए पैसों में से कुछ पैसे चोरी कर लेता है। एक दिन उस बच्चे को चोरी करते हुए दूसरे बच्चे ने देख लिया और उस बच्चे ने जाकर हाफि जी से कह दिया कि यह बच्चा चोरी कर रहा है, और हाफिज जी ने उस बच्चे से बात की। वह बच्चा मस्जिद में उपस्थित बच्चों के सौंप दिया गया और बच्चों से कहा कि जाओ उसके घर जाकर उसकी शिकायत करो। लेकिन

उन बच्चों ने उस बच्चे को रास्ते में ले जाकर इतना मारा कि वह घायल हो गया और उसके सिर से खून बहने लगा। जब यह बात उस बच्चे के घर पर पता चली तो बच्चे के माता पिता ने मस्जिद में जाकर हाफिज जी से बातचीत की। लेकिन यह बात हाफिजी को पता ही नहीं थी कि उस बच्चे को इतना मारा गया है कि वह घायल हो गया है। हाफिज जी ने सभी बच्चों को डाटा और समझाया। लेकिन दूसरे बच्चों का कहना है कि जो उस बच्चे के साथ हुआ वह गलत हुआ और इस पर हाफिज जी को कड़ा एक्शन लेना चाहिए और माता-पिता को भी ताकि ऐसा आगे चलकर और किसी बच्चे के साथ ना हो।

बच्चे करते हैं बड़ी-बड़ी बिल्डिंगों से लोहा चोरी

बातुनी रिपोर्टर : अजीजुल
बालकनामा रिपोर्टर : असलम

विजिट के दौरान हमारे पत्रकार को अजीजुल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भैया मेरे घर के सामने एक बहुत बड़ा कबाड़ी का गोदाम है। वहां पर कुछ ऐसे बच्चे रहते हैं जो अजीजुल के घर के पास वाली बिल्डिंग से लोहा, सरिया, प्लास्टिक इत्यादि चोरी करके कबाड़ी की दुकान में जा कर बेच देते हैं। एक दिन बिल्डिंग के मालिक ने चोरी करते हुए इन सभी बच्चों को पकड़ लिया था और इनको एक साथ बांध दिया था। इसके बाद उन्होंने इनके घर से इनके माता-पिता बुलाया और उनको बताया कि आपके बच्चे इस बिल्डिंग में चोरी करते हैं। उन्होंने उनके अभिभावकों से कहा कि हमारा जो भी सामान चोरी हुआ है उसका मुआवजा मुझे दो। बच्चों के माता-पिता यह सुनकर घबरा गए और उनसे कहा कि साहब हम तो बहुत गरीब हैं और हम आपको क्या मुआवजा दे पाएंगे। हमारे बच्चे तो ऐसा काम नहीं करते ? तब एक बच्चे ने बताया कि वो लोग यहां से जो भी सरिया, लोहा चोरी करते हैं उसको कबाड़ी की दुकान में बेच

देते हैं और इन्हें जो भी पैसा मिलता है ये उससे बीड़ी, सिगरेट, दारू आदि का नशा करते हैं। कभी-कभी बड़ा हाथ मारने पर जब कमाई अच्छी हो जाती हैं तो यह ताश पत्ते और जुआ आदि भी खेलते हैं। इनके मां बाप को लगता है कि उनके बच्चे कबाड़ा बिन कर ये पैसे कमाकर लाए हैं। लेकिन उन्हें नहीं पता होता है कि यह बच्चे कंपनियों में से लोहा चोरी करके उसे बेचकर ये पैसे लाते हैं। इसमें गलती इनके मां बाप की भी हैं क्योंकि ये अपने बच्चों से सारे पैसे ले लेते हैं और उन्हें खर्च करने के लिए कुछ पैसे ही देते हैं। फिर इन बच्चों में लालच जाग जाता है और यह एक दिन में 5000 रूपए तक का लोहा बेजते हैं। अजीजुल ने यह भी बताया कि भैया हमारे यहां से अगर यह कबाड़ी की दुकान हट जाए तो यह बच्चे सुधर जाएंगे।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

मलबे से ईंटें बीनकर उसे बेचते हैं बच्चे, उससे मिले पैसों से ही चलता है उनके घर का खर्चा

रिपोर्टर साबिर

पत्रकारों ने कामकाजी बच्चों से बातचीत की तो 10 साल के बालक ने बताया," हम बच्चे अपने माता-पिता के साथ सुबह के 8 बजे से लेकर शाम के 5 बजे तक मलवा बीनने के लिए आ जाते हैं। हम बच्चे जेसीबी द्वारा गिराए गए घरों में ईंटो को बीनने का काम करते हैं। इस स्थान पर अधिकतर बच्चे ईट बीनने का काम करते हैं। सब चाहते हैं कि सभी को ज्यादा ईट मिले इस कारण बच्चे चलते हुए ट्रैक्टर और ट्रक के ऊपर चढ़ जाते हैं और वह उस ट्रक में जल्दी-जल्दी ईट ढूंढते हैं। जैसे ही उनको ईंट मिल जाती है, तो वह उसे ट्रैक्टर से नीचे फेंक देते हैं। हम बच्चों के जो माता-पिता ट्रक ट्रैक्टर के नीचे खड़े होते हैं वह उन ईट को उठा लेते हैं। पूरे दिन में 10 बार से 12 बार ट्रैक्टर और ट्रक आ जाते हैं। जिसमें से हम बच्चे एवं माता-पिता मिलकर पूरे दिन में 300 ईट इकट्ठी कर लेते हैं। ईट इकट्ठा करने के बाद एक स्थान पर रख लेते हैं। हम जब यह ईट मलवे से निकालते हैं, तो इनमें सीमेंट लगा होता है। हम बच्चों के पास हथोड़ा और छेनी होती हैं जिससे हम इनको साफ करते हैं। ईट साफ करने के दौरान हाथ में चोट भी लग जाती है और लगने के बाद हाथ में सूजन भी आ जाती है फिर भी हमें यह काम करना पड़ता है। ईट साफ करने के बाद हम यह दूसरे लोगों को बेचते हैं। एक ईट 5 रूपए की जाती है। हम जब दूसरे लोगों को ईट बेचते हैं तो वह लोग हमें पूरे पैसे नहीं देते और कहते हैं, कि तुम्हारी आधी ईट तो खराब है। इस कारण हम लोगों को वह ईट कुछ कम दामों में ही देनी पड़ती है। यह पैसे हमारे घर के काम में इस्तेमाल होते हैं जिनसे हमारा और हमारे पूरे परिवार का खर्चा चलता है।

बस्ती के नजदीक शराब का ठेका होने से परेशान लड़कियां घर से बाहर निकलना हुआ मुश्किल

बातूनी रिपोर्टर लक्ष्मी व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

लखनऊ शहर में आपको ऐसे हजारों बच्चे मिलेंगे जो किसी ने किसी समस्या से पीड़ित हैं। लखनऊ के बालकनामा पत्रकार जब ऐसे ही बच्चों से मिले तो यह खबर सामने आई कि यहां पर ऐसे कुछ स्थान है, जहां बच्चे फुटपाथ के किनारे अपनी बस्ती बनाकर रहते हैं। जिसके कारण उन्हें बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जब हमारी उन बच्चों से बात हुई तो उन बच्चों का कहना था कि दीदी यहां पर वैसे तो बहुत सी समस्या है लेकिन हमारे लिए सबसे बड़ी समस्या यहां पर बना शराब का ठेका है। यहाँ पर खुले इस शराब के ठेके के कारण हमें बहुत दिक्कतें होती हैं। इस ठेके के कारण ना ही हम लोग नहा पाते हैं, न बाहर के कोई काम कर पते हैं और ना ही हम लोग कपड़े धो पाते हैं। साथ ही बच्चों ने यह भी बताया कि यह ठेका सुबह से लेकर शाम तक खुला रहता है, जिसके कारण हम लोगों के घर से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। कुछ बच्चों ने यह भी बोला कि हम लोग बाहर के छोटे छोटे काम करने से डरते हैं जैसे मुझे सिलाई के लिए टेलर के पास कपड़े डालने हैं, लेकिन हम नहीं डाल पाते। क्योंकि जिस गली में टेलर हैं उसी गली में वह ठेके की दुकान पड़ती है। इस तरह के वातावरण से हम लोग बहुत परेशान हो गए हैं, जहाँ पर हम लड़कियों की कोई सुरक्षा और स्वतंत्रता ही नहीं हैं।

घरों में काम करके पैसे कमाना है जरुरी या पढ़ाई ?

ब्यूरो रिपोर्ट

बालकनामा के पत्रकार नोएडा की विजिट पर थे तो पत्रकारों ने देखा कि एक बालिका एक स्थान पर खामोश खड़ी हुई है, और वह काफी उदास भी लग रही है। पत्रकारों ने उस बालिका से जाकर बात की और उसकी उदासी का कारण जाना तो तब पता चला बालिका की उम्र 13 वर्ष है और वह नोएडा में अपने माता-पिता के साथ किराए के मकान में रहती है। बालिका तीन महीने रोज ट्यूशन पढ़ने जाती थी, लेकिन वह स्कूल नहीं जा पाती थी। क्योंकि घर का कामकाज करना पड़ता था। एक दिन पिताजी ने पड़ोस के अंकल से कोठी में काम कराने की बात की और पिताजी ने माताजी से गुस्से में आकर कहा कि अब बिटिया ट्यूशन ना जाकर काम पर जाएगी। यह बात जब मुझे पता चली तो वह बहुत उदास हो गई। उसकी माताजी ने उससे कहा कि अब तुम ट्यूशन ना जाकर काम पर जाओगी और फिर उसका ट्यूशन से नाम हटवा दिया।

अब वह रोज सुबह आठ बजे कोठी में काम करने के लिए जाती है और शाम के छह बजे तक घर आती है। कोठियों में साफ सफाई, बर्तन धोना यह सब काम करने के बाद उसको हर महीने के 9000 रूपए मिलते हैं जो माता-पिता ले लेते हैं। लेकिन उस बच्ची को दुःख इस बात के है कि वो पढ़ना तो चाहती है लेकिन उसके माता-पिता ने उसका पढ़ाई से नाता ही तोड़ दिया।

नशा करने के लिए फ्लाईओवर पर खड़े ट्रक से सामान करते हैं चोरी

बातूनी रिपोर्टर तोहिद वह रिपोर्टर किशन

नशा इतना जरूरी है कि नशे का इस्तेमाल करने के लिए सड़क एवं कामकाजी बच्चे इतना मजबूर हो जाते हैं कि वो गलत कामों में पड़ जाते हैं। 17 वर्षीय बालक ने बताया कि भैया मेरे घर के बगल में ही एक फ्लाईओवर है। उन फ्लाईओवर पर बड़े-बड़े ट्रक खड़े रहते हैं और उनमें फल, सब्जी, सिलाई मशीन, आदि सामान भी भरे होते हैं।

फ्लाईओवर पर रात के समय जो ट्रक खड़े होते हैं उनमें कुछ ट्रक में बंद करने का साधन होता है और कुछ में नहीं होता। जो बच्चे इस फ्लाईओवर के आसपास रहते हैं, वह बच्चे गाड़ियों के पास आकर रात में गाड़ियों में चढ़कर यह सामान चोरी कर लेते हैं। जिस ट्रक के ड्राइवर रात में इतनी गहरी नींद में सो जाते हैं कि उन्हें अपना होश नहीं रहता। क्योंकि वह दिन भर सड़कों पर गाड़ियां चलाते हैं और रात का आराम करने के लिए फ्लाईओवर पर ही अपनी गाड़ियां खड़ी करके सो जाते हैं। जब यह बच्चे किसी व्यक्ति के ट्रक में चोरी कर रहे होते हैं तो इस ट्रक के पीछे जो ट्रक खड़े होते हैं, वह ट्रक का व्यक्ति भी इन बच्चों को चोरी करते हुए देखता है परंतु वह कुछ नहीं कहता। यदि वह कुछ कहेगा तो यह बच्चे उसको पत्थर मारकर भाग जाते हैं और शीशा तोड़ देते हैं। जो यह सामान बच्चे चोरी कर लेते हैं, वह सामान फिर यह बच्चे दुकानों में जाकर बेचते हैं या मार्केट में खुद ही सेल कर देते हैं। बेचने से जो पैसा आता है, उन पैसों से नशा करते हैं।

पढ़ना है जरुरी लेकिन पैसों के अभाव में बच्चे कैसे करें अपनी पढ़ाई पूरी

रिपोर्टर किशन

हमारे जीवन में शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन कुछ ऐसी परिस्थितियां आ जाती हैं कि हमें मजबूरन स्कूल छोड़ना पड़ता है। गुडगांव में रह रहा परिवर्तित नाम दिनेश से बातचीत के दौरान पता चला कि दिनेश की उम्र 15 वर्ष है। दिनेश रोज स्कूल जाता है। दिनेश के घर से स्कूल 4 किलोमीटर दूर है। दिनेश का पढ़ाई में बहुत मन लगता है और वह चाहता है कि वह एक दिन भी छुट्टी ना करे और रोजाना स्कूल जाए। दिनेश की माता जी घर पर रहकर घर का कामकाज करती हैं और दिनेश के पिताजी बेलदारी का काम करते हैं। दिनेश स्कूल जाने के लिए अपने पिता से रोज 20 रूपए लेता और उन्हीं पैसों से टेंपो या रिक्शा करके स्कूल जाता था। लेकिन दिनेश के पिताजी के काम के पैसे जल्दी नहीं मिल पाने के कारण उन्होंने दिनेश को कुछ दिन पैसे देने से मना कर दिया। इस बात से दिनेश बहुत उदास था। वह ना तो स्कूल जा पा रहा था और ना अपने दोस्तों से मिल पा रहा था। इस कारण वह एक किराना स्टोर की दुकान में काम करने लगा। वह सुबह स्कूल जाता और स्कूल से आने के बाद खाना खाकर किराना स्टोर की दुकान पर रात के १० बजे तक काम करता और जो पैसे मिलते उन पैसों से वह किराया लगाकर स्कूल जाता। वह एक महीना इन पैसों से लगातार स्कूल गया लेकिन वह काम के साथ-साथ अपनी पढ़ाई पर अच्छे से ध्यान नहीं दे प रहा था। इस कारण दिनेश का स्कूल छूट गया। अब दिनेश किराना स्टोर की दुकान में काम करता है। दिनेश का कहना है कि मेरे जैसे ऐसे बहुत सारे बच्चे हैं जिनका किसी न किसी कारण स्कूल छूट जाता है। मैं चाहता हूं कि स्कूल में कुछ ऐसी सुविधा की जाए ताकि बच्चे रोजाना स्कूल जा पाए।

रहने का स्थायी ठिकाना न होने के कारण दर दर भटकने को मजबूर बच्चे

बातूनी रिपोर्टर ममता व बालाकनामा रिपोर्टर आंचल

आज कल हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे बदलती स्थिति से काफी परेशान हैं। हमारे लखनऊ की बालाकनामा की पत्रकार ने कुछ स्थानों की विजिट कर बच्चों की समस्या जानने की कोशिश की तो बच्चों ने बताया कि दीदी यहां पर इस बस्ती के बगल में एक बहुत बड़ी बिल्डिंग बनी हुई है। इस बिल्डिंग के मालिक ने बोला है कि यहाँ जितनी भी झोपड़ियां हैं उनको खाली कर दो वरना हम उनको तोड़ देंगे। अभी हम लोगों ने धीरे-धीरे अपना सामान पैक करना शुरू कर दिया है और जल्द से जल्द यहां की जगह को खाली करने की कोशिश कर रहे हैं। उनका यह कहना है कि अगर जगह खाली नहीं करोगे तो हम लोग आपकी झोपड़ी तोड़ देंगे और जितना भी सामान है उसको ले जाने नहीं देंगे।

पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि यहां से आप लोग अपनी झोपडी तो हटा लोगे लेकिन क्या आपके पास कोई पक्की जगह है जहां पर आप दोबारा से अपना घर बना सकते हो? तो कुछ बच्चों ने बोला कि दीदी हमने तो यह जगह किराए पर ली है और कुछ बच्चों ने बोला कि दीदी हम लोग जहाँ जगह होती है वहां जाकर अपनी झोपड़ी लगा लेंगे। बच्चों से यह भी पूछा कि अगर आप यहां से चले जाएंगे तो आप पढ़ाई कैसे करोगे? तो बच्चों ने बोला दीदी आप ही बताओ कि हम लोग क्या करें जहाँ हमारे मम्मी पापा हमें ले जाएंगे वहीँ पर जाएंगे और रही बात पढ़ाई की तो हम लोगों के नसीब में जो लिखा होगा वही तो होगा उसको हम लोग नहीं बदल सकते हैं।

दो वक्त की रोटी के लिए क्या क्या नहीं करना पड़ता

इतनी सर्दी में भी सुबह 5-6 बजे से ही सब्जी मंडी में सब्जी बीनने के लिए जाते हैं सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर कामनी व रिपोर्टर संगीता लखनऊ

जैसा कि यह बात तो हम सभी लोग जानते हैं कि हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने घर की मदद करने के लिए कोई भी काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं। वह काम चाहे जितना बड़ा खतरनाक क्यों ना हो। ऐसा ही हाल हमारे लखनऊ के बच्चों का भी है। जब हमारे लखनऊ के बालकनामा पत्रकार ने बच्चों की समस्या जानने की कोशिश की तो हमारी बातूनी रिपोर्टर कामिनी ने बताया कि दीदी यहां पर कुछ बच्चे ऐसे भी हैं जो सुबह ५-६ बजे से ही सब्जी मंडी में सब्जी बीनने के लिए जाते हैं। और सड़ी गली सब्जी बीन कर लाते हैं। कुछ बच्चे घर के लिए बीन कर लाते हैं और कुछ बच्चे ठेले पर बेचने के लिए बीन कर लाते हैं। और तो और दीदी पहले तो गर्मी थी तो भी यह लोग फूल कपड़े पहन कर नहीं जाते थे तो चल जाता था लेकिन दीदी अब तो सुबह-सुबह बहुत ठंड भी होती है तो भी यह लो फुल कपड़े पहन कर नहीं जाते और ऐसे ही चले जाते हैं। जिसके कारण यह लोग बीमार भी पड सकते हैं पर फिर भी यह बच्चे इस बात को नजरअंदाज कर देते हैं।

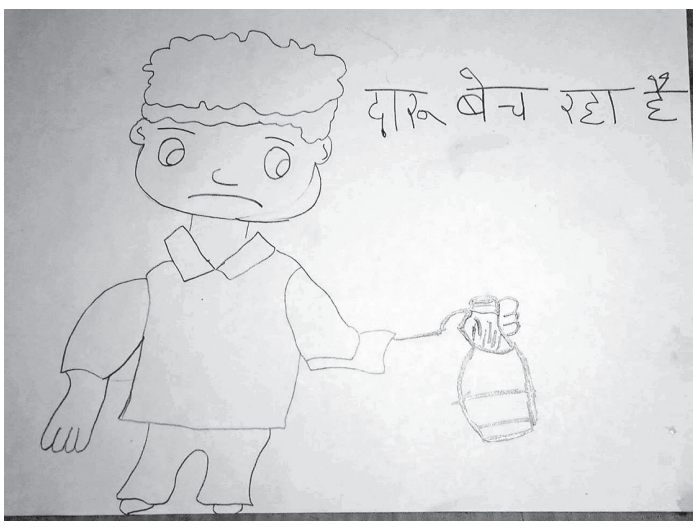

शराब बेचकर अपनी गुजर बसर करनी पड़ती है

रिपोर्टर साबिर

सड़क एवं कामकाजी बच्चों की वर्तमान समस्या को जानने के लिए पत्रकारों ने दौरा किया। दौरा के दौरान वह 15 वर्षीय बालक से मिले, जिसके माता-पिता दोनों ही नहीं है। उनकी मृत्यु हो चुकी है। बालक अपनी एक बहन के साथ किराए की झुग्गी में रहता है। जिस झुग्गी में बालक रहता है उसके आगे एक सरकारी शराब का ठेका है। वह बालक उस शराब के ठेके से 50 रुपए वाला शराब लेकर आता है और अपनी झुग्गी बस्ती में शराब बेचता है। एक शराब की बोतल वह 70 रूपए की बेचता है। बालक ने कहा कि जब मैं शराब बेचता हूं तो मुझे डर लगा रहता है कि कहीं मुझे पुलिसवाले ना पकड़ ले। मेरे माता-पिता भी नहीं है जो मुझे छुड़ा सकते। लेकिन यह मेरी मजबूरी है कि मैं इस काम का करूँ। यदि काम नहीं करूंगा तो मेरा और मेरी बहन का खर्चा कैसे चलेगा। इस कारण मुझे यह काम करना पड़ता है। जब मैं शराब बेचता हूं तो कई दुष्ट लोग ऐसे भी होते हैं, जो मेरे को बच्चा समझकर कम पैसे पकड़ा कर चले जाते हैं और मैं उनसे कुछ नहीं कह पाता क्योंकि यदि मैं उनसे कुछ कहूंगा तो वह पुलिस को बता देंगे।

बिना लीव एप्लीकेशन के छुट्टी पर जाने पर फाइन के जुर्माने से बच्चे हुए परेशान

क्या बेसिक शिक्षा अधिकारी इस पर देंगे ध्यान?

ब्यूरो रिपोर्ट

वर्तमान में महंगाई बढ़ती ही जा रही है और एक एक रुपए कमाना और बचाना बहुत मुश्किल हो रहा है। जो बच्चे स्कूल जाते हैं यदि वो स्कूल न जाएं तो उस पर स्कूल की तरफ से बच्चों को क्या सजा दी जाती है, इस खबर को विस्तार से जानते हैं। एक बालक जिसकी उम्र 13 वर्ष है उसने बालकनामा पत्रकारों को बताया कि भैया हम बच्चे रोजाना स्कूल जाते हैं। लेकिन हम बच्चों को स्कूल की छुट्टी लेने से पहले हमें स्कूल में संदेश भेजना पड़ता है कि किसी कारणवश हम स्कूल नहीं आ पाएंगे। कभी हमें बुखार आ जाए या हम जरूरी काम से माता-पिता के साथ चले जाएं तो हम स्कूल में संदेश नहीं भेज पाते। हमारे स्कूल की तरफ से यह कड़ा नियम है, जो बच्चा बिना बताए स्कूल की छुट्टी करेगा या किसी कारणवश छुट्टी लेनी है तो स्कूल में संदेश भेजें। यदि नहीं भेज पाते हैं तो अगले दिन आकर 10 रूपए जुमार्ना भरे। यदि बच्चे स्कूल में अपनी छुट्टी की फाइन के १० रूपए नहीं दिए तो रोज अध्यापक और अध्यापिका से पिटाई खानी पड़ती है। उन्हें हम स्कूल ना आने का कारण बताएं तो वह हमें झूठा ठहराते हैं। अध्यापक, अध्यापिका रोज जब तक मारते हैं जब तक बच्चा अपना फाइन न भर दे। अधिकतर बच्चे ऐसे भी करते हैं जो पैसे उन्हें घर से चीज खाने के लिए मिलते हैं वह पैसे बचाकर स्कूल में लेकर आते हैं और छुट्टी लगाने का जुमार्ना उन पैसों से भर देते हैं।

दूसरों की गलती की सजा हमें क्यों मिलती है

रिपोर्टर साबिर

सड़क पर अधिकतर कामकाजी बच्चे तरह तरह का काम करते हुए नजर आते हैं। लेकिन सडकों पर आते जाते कई ऐसे लोग भी होते हैं जो उन्हें गलत बातें बोलकर निकल जाते हैं। कबाड़ी का काम कर रहा 13 वर्षीय बालक दिल्ली की कई ऐसी मार्केट में कबाड़ा बीनने का काम करता है। उसने बताया कि मैं जब गत्ता, प्लास्टिक,दारू की बोतल आदि कबाड़ा बिन रहा होता हूं तो मार्केट में कई ऐसे भैया हैं जो मुझे कबाड़ बीनने से मना करते हैं। वो कहते हैं कि तुम इस मार्केट में मत आया करो क्योंकि हमारे सामान की चोरी भी हो जाती है। जब कि में तो अपना कबाड़े का सामान उठता हूँ और चुपचाप वहां से निकल जाता हूँ। लेकिन फिर भी वो मुझ पर शक करते हैं। यह चोरी मार्केट में रहने वाले बड़े बड़े नशेड़ी लोग करते हैं। लेकिन वो इस चोरी का इल्जाम हम पर लगते हैं और हमें मजबूरन में उन्हें हां कहना पड़ता है। यदि हम हां नहीं कहेंगे तो वह हमें मारने लगते हैं। हमें मजबूरी में मार्केट में कबाड़े का काम करने के लिए जाना पड़ता है। दिन भर में हम एक से दो सौ रुपए कमा लेता हूं जो मैं अपने ऊपर ही खर्च कर देता हूं।

टूथब्रश बनाते समय हाथों में पड़ जाते हैं छाले, लेकिन काम करना है मजबूरी

बातूनी रिपोर्टर मानपाल वह रिपोर्टर किशन

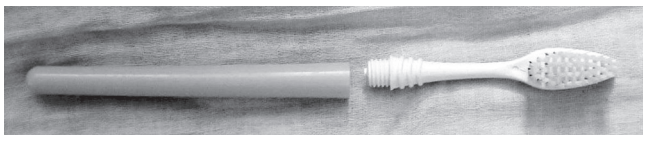

दिल्ली की झुग्गी बस्तियों में रहने वाले विशाल (परिवर्तित नाम) ने बताते हुए कहा कि मैं दिल्ली में अपने माता पिता के साथ किराए के कमरे में रहता हूं। विशाल टूथब्रश बनाने वाली फैक्ट्री में काम करता है। विशाल ने बताया कि मैं टूथब्रश का जोड़ने का काम करता हूँ जैसे आप फोटो में देखते हैं। इस टूथब्रश में दो भाग होते हैं, एक पोला और एक गिट्टी वाला होता है। इन दोनों को एक दूसरे में जोड़ना पड़ता है तब जाकर हमारा टूथब्रश तैयार होता है। पोला और गिट्टी को जोड़ते समय उन्हें मोड़ना पड़ता है। जब हम यह हाथों से कर रहे होते हैं तो इसमें अंगूठे का ज्यादा इस्तेमाल करना होता है। इससे अंगूठे की खाल गर्म पड़ जाती है और अंगूठे में फुलके भी पड़ जाते हैं। जिसके कारण अंगूठा दर्द होने लगता है तो मैं और मेरे आस-पास के बच्चे उसमें बीटाडीन लगाकर बैंडेज लगा लेते हैं, ताकि वह दर्द ना करें। इससे हम काम भी कर पते हैं क्योंकि काम नहीं करेंगे तो फिर खर्चा कैसे चलेगा। यह टूथब्रश तैयार करने के बाद 4 किलो में जाता है। फिर हम यह सामान अपने मकान मालिक को दे देते हैं और दिन भर में डेढ़ सौ से दो सौ रूपए तक का काम हो जाता है और इन्हीं पैसों से हम कमरे का किराया चुका देते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बाल विवाह को रोकने के लिए महिला हेल्पलाइन नंबर1091 पर कॉल करें

बातुनी रिपोर्टर : मुस्कान
बालकनामा रिपोर्टर : असलम

बाल विवाह को रोकने के लिए कानून बनने के बाद भी अभी भी इस पर पूरी तरह से रोक नहीं लग पायी है। हमारे बालकनामा पत्रकार असलम ने एक बच्ची से बात की जिसका रीना (परिवर्तित नाम) है। रीना ने बताया कि भैया हमारे यहां एक लड़की है जिसका नाम मुस्कान है और उसकी उम्र 15 साल है। उसके घर वाले उसकी शादी एक 24 वर्षीय पुरुष से जबरदस्ती करवाना चाहते हैं। पत्रकार ने रीना से पूछा कि मुस्कान क्या करती है तो उसने बताया कि भैया मुस्कान सातवीं कक्षा में पढ़ती है। वह पढ़ने में बहुत ही अच्छी है और उसको स्कूल के मैडम और सर बहुत अच्छे से जानते हैं क्योंकि वह पढ़ाई के साथ साथ खो-खो भी बहुत अच्छे से खेलती है। उसने अपने स्कूल के लिए स्टेट लेवल में सिल्वर मेडल पुरस्कार जीता था और मुस्कान अपनी स्कूल टीम की कैप्टन भी थी। लेकिन उसके घरवाले मुस्कान को पढ़ने देने नहीं चाहते। वह हर वक्त कहते रहते हैं कि पढ़ने की कोई जरूरत नहीं है, तुम्हारी शादी करवा देंगे। इसलिए मुस्कान एक बार घर से भाग भी गई थी फिर जब मुस्कान मिली तो उसके घरवालों ने उसकी शादी 5 दिनों के अंदर अदर करवा दी। हमारे पत्रकारों ने रीना को सलाह दी कि अगर आपके आस पास कोई भी पुरुष या महिला की आयु 21 और 18 से कम हो तो आप सभी महिला हेल्पलाइन नंबर1091 पर कॉल करें और बाल विवाह की शिकायत दर्ज करवाएं। बाल विवाह एक अपराध है और इसमें शामिल होने वाले हर व्यक्ति को 2 साल की जेल तथा एक लाख का जुमार्ना भरना पड़ सकता है।

मुश्किलें कितनी भी हो पर हिम्मत नहीं हारी काम के साथ-साथ पढ़ाई भी है जरुरी

बातूनी रिपोर्टर : साहित
बालकनामा रिपोर्टर : असलम

सड़क पर रहने वाले बच्चों का जीवन किसी भी मुश्किल से कम नहीं है,लेकिन हीरो वही होते हैं जो चाहे कितनी भी मुश्किलें क्यों न आ जाएं पर हिम्मत नहीं हारते। बालकनामा पत्रकारों ने बच्चों से इस बारे में बात की तो शाहिद ने बताया कि भैया हमारे यहां रोड़ पर कुछ बच्चे फल की रेड़ी लगाते हैं। यह बच्चे मेरे स्कूल में भी पढ़ते हैं और उनमें से एक लड़का तो मेरी क्लास का मॉनिटर भी है। भैया वह लड़का बहुत ही मेहनती है। वह सुबह ६ बजे उठकर पहले मंडी जाता है और 8 बजे मंडी से सब्जी लेकर आता है। जल्दी जल्दी सरे काम निपटाकर और तैयार होकर वह 9:30 बजे स्कूल जाता है। स्कूल से 3:30 बजे वापस आकर वह वह अपनी रेड़ी पर सब्जियां एवं फल बेचता है। सब्जियां फल बेचकर वह जब घर आता है तो वह रात को बैठकर पढ़ाई भी करता है। इतना कठिन परिश्रम करने की वजह से उसके हाथों में गांठ बन जाती है और कई बार तो उसके हाथों से खून भी निकलने लगता है और हाथ फटने लगते हैं। इसका इस दुनिया में अपनी माँ के अलावा और कोई नहीं है। इसकी माताजी कोठियों में खाना बनाने का काम करती थी और यह लड़का सिर्फ पढ़ाई करता था। लेकिन उसकी माँ की तबियत खराब होने के कारण उनका काम बंद हो गया और तब से इसको फल और सब्जियों की रेड़ी लगाने का काम करना पड़ता है। यह पढ़ना तो चाहता है परंतु जिम्मेदारियों के कारण सही से पढ़ नहीं पा रहा और ना ही अपना सपना पूरा कर पा रहा है। इसकी मदद करने वाला भी कोई नहीं है।

सौतेली मां के गलत व्यवहार से परेशान होकर घर छोड़ने पर मजबूर हुआ शाहिद

रिपोर्टर किशन

मां की जगह जीवन में क्या होती है इस बात से तो हम सभी भली भांति परिचित हैं। लेकिन अपनी मां और सौतेली मां में क्या फर्क होता है यह बात इस खबर के माध्यम से आपको पता चल जाएगी। हम आपको परिवर्तित नाम शाहिद की आपबीती के बारे में बताएंगे। शहीद की उम्र 11 वर्ष है और वह बंगाल का रहने वाला है। शाहिद के घर में उसकी सौतेली माताजी, पिताजी और वह, ये तीन ही सदस्य हैं।

कुछ समय पहले शाहिद की माताजी देहांत हो गया था। तब शाहिद और उसके पिताजी बंगाल में रहते थे, तो उधर कुछ काम न होने के कारण शाहिद के पिता जी शाहिद को लेकर दिल्ली आ गए। दिल्ली आकर उन्होंने बहुत काम ढूंढा पर कोई काम न मिलने कारण कुछ दिन बाद उसके पिता जी अपना खुद का फल और सब्जी काम करने लगे। काम के साथ-साथ शाहिद के पिता जी शाहिद की देखभाल नहीं कर पा रहे थे, इस कारण उन्होंने शाहिद को बिना बताए अपनी दूसरी शादी कर ली। यह बात शाहिद को अच्छी नहीं लगी। कुछ दिन तक तो सब ठीक चलता रहा, लेकिन धीरे धीरे शाहिद की सौतेली मां शाहिद से नफरत करने लगी। वह शहीद को धमकी देती कि बैठा बैठा खाता रहता है और कुछ कामकाज नहीं करता। वह उसे बहुत मारती भी थी। यह बात सहन ना हुई और वह अपने घर से भाग गया। अब शाहिद मछली की फैक्ट्री में काम करता है और किराए की झुग्गी में रहता है। वह एक दिन में 300 रूपए कमा लेता है और इससे उसका अपना खर्चा चलाता है।

हम भी अपने मां-बाप का दुख और अपनी जिम्मेदारियां समझते हैं

ब्यूरो रिपोर्ट

यह कहना बिलकुल गलत है कि सिर्फ लड़कियों के ऊपर ही घर की जिम्मेदारी होती हैं और लड़कियां ही अपना घर चलाती हैं। अगर यह धारणा है कि लड़के कुछ नहीं करते हैं तो बहुत गलत माना जाता है। क्योंकि लड़के भी अपने घर और परिवार को संभालने का काम करते हैं। साथ ही लड़कियों जैसी जिम्मेदारियां उठाने का काम भी करते हैं। बालकनामा पत्रकार विजिट के दौरान ऐसे कुछ बालकों से मुलाकात की तो बच्चे ने बताया कि दीदी ऐसा आप लोगों को लगता है कि सिर्फ लड़कियां ही सब कुछ करती हैं लेकिन ऐसा नहीं है। हमें भी अपना परिवार चलाना पड़ता है। हमारे परिवार की स्थिति ठीक नहीं होती इसलिए हमें छोटी सी उम्र से ही बहुत सारे काम जैसे पंचर बनाने, बकरी चराने, मजदूरी करने के काम करने पड़ते हैं। यह काम हमें बचपन से ही सीखना पड़ता है ताकि हम बड़े होते ही अच्छे पैसे कमा सकें। हमसे जितना होता है हम भी अपने मम्मी-पापा और परिवार के लिए करते हैं। लेकिन हम अपने घरवालों के लिए कितना भी कर लें पर उसको इतना आगे नहीं रखा जाता, जितना लड़कियां के काम को रखा जाता है। हम भी अपने मां-बाप का दुख समझते हैं और हमें भी अपनी जिम्मेदारियों को कैसे उठाना है वह जानते हैं।

दो मित्रों की कहानी

रिपोर्टर साबिर

जीवन में सच्चे मित्र बनाना भी बहुत जरुरी है। पत्रकार बैठक करने के दौरान कुछ ऐसे बच्चों से मिले, जिनकी दोस्ती एक मिसाल है। इस बालक की उम्र 13 वर्ष है, उसने बताया कि मैं रोज स्कूल जाता हूं और सातवीं कक्षा में पढ़ाई करता हूं। एक दिन जब मैं स्कूल गया तो मेरी कक्षा में एक बालक मेरे सीट के पीछे बैठकर पढ़ाई कर रहा था। उस दिन मेरी अध्यापिका ने मुझे कुछ देर के लिए क्लास मॉनिटर बना दिया '८४ल्ल' वह कुछ जरूरी काम से बाहर चली गई। अध्यापिका ने मुझे जिम्मेदारी दी थी कि यदि कोई आपस में बात और शैतानी करें तो आप हमें बता दीजिएगा। जब अध्यापिका क्लास में आई तो हमने उन सभी बच्चों की शिकायत बताई जो बच्चे शैतानी कर रहे थेऔर बात नहीं सुन रहे थे। अध्यापिका ने उन बच्चों को पनिशमेंट दी और डंडे से पिटाई भी की। लेकिन जो बालक मेरे सीट के पीछे बैठा था उसे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आई और वह मेरे ऊपर नाराज हो गया। जब मैं स्कूल से बाहर निकला तो वह मुझे मारने लगा। मैं अकेला था और कुछ नहीं कर पाया। अगले दिन स्कूल में जाकर यह बात मैंने अपनी अध्यापिका को बताई। अध्यापिका ने फिर दोबारा उसे पनिशमेंट दी और कहा कि अब इसे कुछ भी नहीं कहोगे और उसने अपनी गलती को स्वीकार किया। उसी दिन परिवर्तित नाम दिलीप जिसकी उम्र 13 वर्ष है। फिर वह मेरा दोस्त बन गया अब वह मेरा इतना प्रिय दोस्त बन गया है कि हर चीज में हम दोनों एक दूसरे की मदद करते हैं। वह झुग्गी में रहता है जब दिलीप को कोई भी परेशानी आती है तो मैं उसकी उसमें मदद करता हूं। वह भी मेरी इसी प्रकार मदद करता है और हम जब स्कूल में खाना लेकर आते हैं तो हम साथ में ही खाते हैं। यदि वह गलत रहा पर चलता है तो उसको मैं समझाता हूं कि यह करना गलत है। मुझे यह बात अच्छी लगती है कि मुझे ऐसा दोस्त मिला, जो मेरी बात को अच्छे से सुनता और समझता है।

खुशी की हिम्मत को सलाम

बातुनी रिपोर्टर : अंजलि
बालकनामा रिपोर्टर : असलम

आज मैं आपको ऐसी बच्ची के बारे में बताने जा रहा हूं जो बहुत ही साहसी व निडर है। इस बच्ची का नाम खुशी (परिवर्तित नाम) है। खुशी जब स्कूल जाती है तो कुछ लड़के उसको घूरते हैं और मौका देख कर खुशी से बात करने की कोशिश करते हैं। एक दिन खुशी स्कूल से अकेली घर जा रही थी तभी एक लड़के ने खुशी से बात की और उससे पूछा कि क्या तुम मेरी दोस्त बनना चाहोगी? खुशी ने जवाब देते हुए कहा कि इतना मारुंगी कि तू हमेशा याद रखेगा और तुम्हारे घर में मां बहन नहीं है जो तुम लड़कियों के साथ ऐसी हरकते करते हो। फिर उस लड़के ने खुशी से दूरी बना ली। अगले दिन जब खुशी स्कूल जा रही थी तो उसी लड़के ने अपने दोस्तों के साथ खुशी को घेर लिया और खुशी धमकाने लगा कि मेरी फ्रेंड बन जाओ नहीं तो मैं तुम्हें बहुत तंग करूंगा। लेकिन खुशी ने बिना डरे उस लड़के को एक थप्पड़ मार दिया और यह देखकर वहां खड़े लोग बहुत खुश हुए। हमारे बालकनामा पत्रकार असलम को जब यह बात पता चली तो असलम ने खुशी से मिलकर उसकी हौसलाफजाई की। खुशी ने असलम से कहा कि भैया मेरे जैसी सैकड़ों लड़कियां हैं जो अकेले स्कूल जाने से डरती हैं और उनके घरवाले भी इसी डर के कारण उनको स्कूल नहीं भेजते हैं। कोई घटना होने पर जब हम पुलिस को कॉल करते हैं कि कोई हमें लड़का छेड़ रहा है तो पुलिस के धमकाने से लड़के एक-दो दिन के लिए लड़कियों का पीछा नहीं करते और कुछ दिनों बाद फिर उनको परेशान करने लगते हैं। इसलिए मैंने यह कदम उठाया और मैं चाहती हूं कि सरकार हमारी मदद करें और ऐसे लड़कों पर सख्त से सख्त कार्रवाई होनी चाहिए जो लड़कियों को पढ़ने से रोकते हैं और उनको घूरते हैं।

खुद का घर ना होने के कारण हर रोज डर डर के जीते हैं बच्चे

बातूनी रिपोटर लक्ष्मी व संगीता

जैसा कि यह बात तो हम सभी लोगों को पता है कि बहुत ही कम कामकाजी बच्चे हैं जो अच्छे से जीवनयापन कर पते हैं। लेकिन बहुत से ऐसे बच्चे हैं जो फुटपाथ पर सड़क के किनारे कहीं भी अपनी छोटी सी झोपड़ी बनाकर रहने लगते हैं। इनको किसी भी तरह की कोई सुविधा नहीं मिलती। कभी पानी की दिक्कत, कभी सार्वजनिक शौचालय की दिक्कत और कभी तो झोपड़िया हटाने को ही बोल दिया जाता है। इससे अभिभावक से ज्यादा छोटे-छोटे बच्चे परेशान होने लगते हैं और उनको इस बात का डर होता है कि अब हम लोग कहां पर जाकर रहेंगे। ऐसे ही इनको अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना करना पड़ता है। ऐसे ही हाल हमारे लखनऊ के बस्ती के बच्चों का भी हैं। इन बच्चों ने अपनी समस्या बताते हुए कहा कि दीदी यहां पर हर रोज कोई न कोई पुलिसवाले आते रहते हैं। अभी हम लोगों की घर कि लाइट हटवा दी गई है, जिसके कारण हम लोग रोज 40 से 50 रुपए तो मोमबत्ती जलाने में खर्च कर देते हैं।और अब हमें झोपड़ी हटाने को बोला जा रहा है। हमें यह भी बोला गया है कि अगर हम लोग झोपड़ी नहीं हटायेंगे तो बुलडोजर आकर सब की झोपड़ी तोड़ देगा। इस कारण हमें हर रोज डर सताता रहता है कि कहीं हम लोगों की झोपड़ी न तोड़ दी जाए।

माता-पिता के बाद अब वो ही है अपने छोटे भाईयों का सहारा गुब्बारे बेचकर करते हैं गुजर बसर

रिपोर्टर जुबेदा

सड़क से गुजर रहे बालकनामा के पत्रकारों की नजर 16 वर्ष बालिका पर पड़ी जो सड़क पर गुब्बारे बेच रही थी। बालिका से बातचीत हुई तो उसने अपनी आपबीती हमें बतायी। बालिका ने बताया कि उसके घर में वो और दो भाई हैं। उसके माता पिता की मृत्यु हो चुकी है। उसके दोनों भाई उससे छोटे हैं और एक 4 वर्ष का है और एक 6 वर्ष का है। वो एक छोटी सी झुग्गी में किराए के मकान में अपने भाई और बहन के साथ रहती है। वह सुबह नौ बजे अपने भाइयों को अपने साथ लेकर यहां आ जाती है और वो सब गुब्बारा बेचने के कार्य में लग जाते हैं। वो सुबह से लेकर शाम तक

गुब्बारे बेचकर 200 रूपए तक कमा लेते हैं और उसी से अपना और अपने घर का खर्च चलते हैं। पत्रकारों ने बालिका से सवाल किया, कि आप स्कूल क्यों नहीं जाते? तो बालिका ने बताया कि इस दुनिया में मेरे भाइयों का मेरे अलावा कोई नहीं है। यदि मैं काम नहीं करूंगी तो मैं और मेरे भाई क्या खाएंगे इसीलिए मुझे यह काम करना पड़ता है। पर मेरा यह सपना है कि जैसे मैं सड़कों पर गुब्बारे बेचने का काम कर रही हूं वैसे मेरे दोनों भाई यह काम ना करें। पत्रकारों ने यह सुनकर बालिका को संस्था द्वारा चलाए जा रहे कांटेक्ट पॉइंट के बारे में बताया और वहां ले जाकर उन बच्चों का नाम भी लिखवाया, ताकि काम के साथ-साथ वो पढ़ाई भी कर सकें।

फ्लाईओवर बनने से बच्चे हुए बेघर

बातूनी रिपोर्टर : सुमित
बालकनामा रिपोर्टर : असलम

हरियाणा के पत्रकार असलम ने कन्हैया (परिवर्तित नाम) के गाँव की अस्सी झुग्गियों का दौरा किया और बच्चों के साथ बातचीत की। बातचीत के दौरान हमारे बालकनामा पत्रकारों को पता चला कि बच्चे फ्लाईओवर बनने से बहुत ही निराश हैं। हुड्डा सिटी एवं हरियाणा की एमसीडी ने जहाँ पर हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे 8 साल से रह रहे हैं वहां की झुग्गियां तोड़कर फ्लाईओवर बना रहे हैं। यही नहीं जगह ना खाली करने पर पुलिसवालों ने वहां के लोगों की जमकर पिटाई भी की। अपनी झुग्गियां टूटने पर बच्चों व उनके माता-पिता ने सरकार एवं अधिकारियों से मदद मांगी लेकिन किसी ने भी उनकी मदद नहीं की। बच्चों का कहना है कि हमें रहने के लिए दूसरी जगह नहीं दे रहे हैं। हम अपनी आवाज उठा रहे तो हमें हमारी आवाज दबा दे रहे हैं, हमें मारपीट रहे हैं। इसलिए हम करें तो क्या करें? कोई हमारी बात नहीं सुनता। पुलिस वाले हमें घर ना खाली करने पर मारते हैं।

गूंगा होने के कारण स्कूल में एडमिशन लेने से मना किया प्रधानाचार्य ने

बातूनी रिपोर्टर : तनमोय
बालकनामा रिपोर्टर : असलम

पत्रकार असलम ने राजू (परिवर्तित नाम) से बात की तो राजू ने बताया कि वह रामपुर (परिवर्तित नाम) गांव में रहता है। उसकी माता जी कोठी में काम करती है और पिता गार्ड की नौकरी करते हैं। राजू बोल नहीं सकता और इस कारण वह पढ़ने नहीं जाता। लेकिन राजू को पढ़ने की बहुत इच्छा है। राजू को फुटबॉल खेलना भी बहुत पसंद है। राजू फुटबॉल बहुत अच्छा खेलता है लेकिन गूंगा होने की वजह से गांव वाले राजू के साथ फुटबॉल नहीं खेलते हैं। वह चाहता है कि मैं भी दूसरे बच्चों की तरह स्कूल में जाऊं और उसे भी स्कूल की फुटबॉल टीम में खेलने का अवसर मिले। राजू गाँव के स्कूल में अपना दाखिला करवाने भी गया था लेकिन स्कूल के अध्यापक और बच्चे राजू को देखकर हंसने लगे तो राजू को बहुत बुरा लगा। अध्यापक एवं स्कूल की प्रधानाचार्य जी ने उसका दाखिला स्कूल में करने से मना कर दिया था। राजू के माता पिता ने स्कूल के प्रधानाचार्य जी से बहुत विनती की, लेकिन गूंगा होने के कारण अध्यापक राजू का दाखिला नहीं ले रहे थे। राजू चाहता है कि जो बच्चे किसी ना किसी कारण से विकलांग हैं और वह पढ़ना चाहते हैं तो उन बच्चों की मदद की जाए ताकि वह पढ़ सकें और अपना सपना पूरा कर सकें।

भाई बहन के रिश्ते में भी समानता होनी है जरूरी

बातूनी रिपोर्टर अंजलि व बालकनामा रिपोर्टर आंचल

अगर हम इन रिश्तो के बारे में बात करें तो सबसे पवित्र रिश्ता भाई बहन का होता है। इस विषय को लेकर हमने कुछ बच्चों से बात की और पूछा कि आपके अनुसार भाई बहन का रिश्ता कैसा होता है? तो बच्चों ने बोला कि दीदी भाई बहन के रिश्ते में कोई समानता नहीं होती, क्योंकि हमने यह देखा है कि एक बहन ही सब कुछ करती है। बहन को ही घर के और समाज के ताने सुनने को मिलते हैं। दीदी हमारे अनुसार तो ऐसा बिल्कुल नहीं होना चाहिए क्योंकि अगर एक मां बाप भाई को प्यार करते हैं तो उतना उन्हें अपनी बेटी को भी प्यार करना चाहिए। उसमें भेदभाव तो बिल्कुल ही नहीं होना चाहिए। साथ ही बच्चों ने यह भी कहा कि दीदी आजकल तो आप देखते ही हो कि अगर किसी भाई से घर के कामों में कोई मदद मांग लो तो उन्हें यह लगता है कि घर के काम सिर्फ बहन या फिर लड़कियां ही करती हैं। तो आप ही बताइए इस रिश्ते में कोई समानता ही नहीं है। बहनों का ऐसा कहना है कि अगर भाई बहन का नाम एक साथ दिया जाता है तो उसी प्रकार से काम में भी भेदभाव नहीं करना चाहिए।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471